SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

संभावनावाद मानव भूगोल में संभववाद

शकुंतला जायसवाल, (Ph.D.), भूगोल विभाग
श्री अग्रसेन गर्ल्स कॉलेज, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

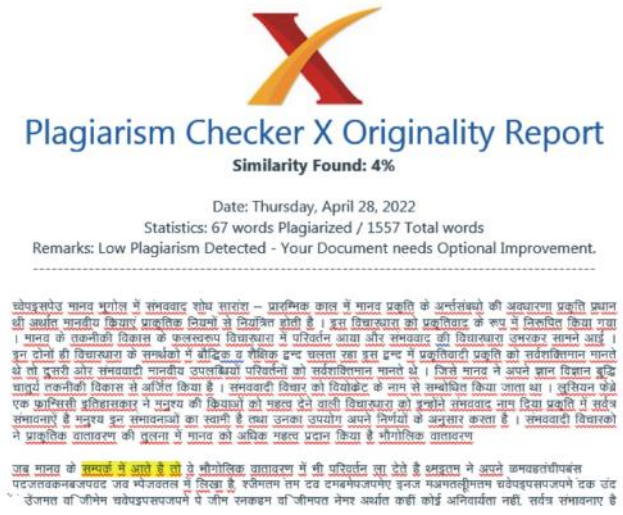

Corresponding Author
शकुंतला जायसवाल, (Ph.D.), भूगोल विभाग
श्री अग्रसेन गर्ल्स कॉलेज, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/04/2022
Revised on : -----
Accepted on : 05/05/2022
Plagiarism : 04% on 28/04/2022

शोध सार

प्रारम्भिक काल में मानव प्रकृति के अन्तर्संबधो की अवधारणा प्रकृति प्रधान थी, अर्थात् मानवीय क्रियाएं प्राकृतिक नियमों से नियंत्रित होती है। इस विचारधारा को प्रकृतिवाद के रूप में निरूपित किया गया। मानव के तकनीकी विकास के फलस्वरूप विचारधारा में परिवर्तन आया और संभववाद की विचारधारा उभरकर सामने आई। इन दोनों ही विचारधारा के समर्थको में बौद्धिक व शैक्षिक द्वन्द चलता रहा। इस द्वन्द में प्रकृतिवादी प्रकृति को सर्वशक्तिमान मानते थे, तो दुसरी ओर संभववादी मानवीय उपलब्धियों परिवर्तनों को सर्वशक्तिमान मानते थे, जिसे मानव ने अपने ज्ञान विज्ञान बुद्धि चातुर्य तकनीकी विकास से अर्जित किया है। संभववादी विचार को वियोक्रेट के नाम से सम्बोधित किया जाता था। लुसियन फेब्रे एक फ्रान्सिसी इतिहासकार ने मनुष्य की क्रियाओं को महत्व देने वाली विचारधारा को इन्होंने संभववाद नाम दिया। प्रकृति में सर्वत्र संभावनाऐं है, मनुष्य इन संभावनाओं का स्वामी है तथा उनका उपयोग अपने निर्णयों के अनुसार करता है। संभववादी विचारको ने प्राकृतिक वातावरण की तुलना में मानव को अधिक महत्व प्रदान किया है। भौगोलिक वातावरण जब मानव के सम्पर्क में आते है, तो वे भौगोलिक वातावरण में भी परिवर्तन ला देते है। Febre ने अपने geographical introduction to History में लिखा है, “There are no necessities, but everywhere possibilities and man as a master of these possibilities is the judge of their use” अर्थात् कहीं कोई अनिवार्यता नहीं, सर्वत्र संभावनाएं है और मनुष्य इन संभावनाओं के स्वामी होने के नाते उनके उपयोग का निर्णयकर्ता है।

मुख्य शब्द

नियतिवाद, संभववाद, नव निश्चयवाद, वियोक्रेट, सर्वशक्तिमान.

मानव भूगोल में संभववाद स्कुलों में सम्प्रदाय के रूप में स्थापित हुआ मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है, अपने प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा उपस्थित की जाने वाली दशाओं में चुनने की स्वतंत्रता रखता है। इसी प्रकार किसी क्षेत्र में, किसी प्रदेश में अपने चयन के अनुसार चीजों को संभव बनाता है। संभववादी नियतिवादी विचारधारा के विरूद्ध खड़े होने वाला सम्प्रदाय था। नियतिवादियों का मानना था कि, प्रकृति ही मनुष्य के जीवन और उसके संस्कृति को पूरी तरह नियंत्रित करती है। वह प्रकृति का दास है। फ्रांसीसी विद्वान फेब्रे ने कहा कि मानव प्रकृति के तत्व को चुनने के लिए स्वतंत्र होता है सर्वत्र संभावनाऐं हैं और मनुष्य इन संभावनाओं का स्वामी है। फेब्रे का विचार है कि कहीं अनिवार्यता नहीं है हर जगह संभावनाऐं है। मानव प्रकृति का स्वामी है। संभावनाओं के उपयोग के स्थिति में जो परिवर्तन होता है, उसमें मानव को ही प्रथम स्थान प्राप्त होता है। मानव एक क्रियाशील प्राणी है, वह अपने चारो ओर के वातावरण में परिवर्तन ला सकता है। मनुष्य में परिवर्तन लाने की असीम क्षमता है ।

संभववाद के समर्थक वातावरण को नियंत्रक के रूप में स्वीकार नहीं करते, वे मनुष्य की दक्षता कार्यकुशलता को स्वीकार करते है। इस विचारधारा को मानने वाले ब्लाश एवं बुन्श बोमैन एवं कार्ल मार्क्स के नाम उल्लेखनीय है।

संभववादी विचारक मानते है कि, प्राकृतिक वातावरण में कुछ न कुछ संभावनाएँ निश्चित है, इस दृष्टिकोण में वह भौगोलिक परिस्थितियों से कम या अधिक लाभ उठा सकता है। संभववादी वातावरण के प्रभाव से विरक्त नहीं रह सकते, मानव को संभावनाएँ तो मिलती है। चुनाव को अपने इच्छा और क्षमता प्रदान करता है, इस चुनाव में भी भिन्न दशाओं में अन्तर को स्वीकार करता है। आप ध्रुवों पर केले नहीं उगा सकते, न ग्रीनलैण्ड में अनानास। सभी संभववादी प्राकृतिक वातावरण के सम्बन्ध में एक मत नहीं है। प्रकृति लोगों को अवसर प्रदान करती है, प्रकृति एक ऐसा कार्यक्षेत्र है जिसकी सीमाऐं नियत है। कुछ संभावनाएँ बहुत ही कठिनाई भरा होता है, जिसे प्राप्त करना होता है वह आसानी से कर लेता है। लेकिन कुछ सम्भावनाओं को निकट भविष्य की संभावना कहकर छोड़ देता है, उसे अधिक व्यय तथा परिश्रम करना पड़ता है। प्रकृति अपना कहर बाढ़ के रूप में अकाल के रूप में लाती है, लेकिन मनुष्य अपने परिश्रम अपने चातुर्य के द्वारा इस विकराल रूप को कम कर देता है या पूर्ण रूप से समाप्त कर देता है। संभववादी की विचारधारा में वातावरण की शक्तियों को भी स्थान दिया गया है, किन्तु अधिकार नहीं। इनके अनुसार प्रकृति योजनाए तैयार करती है और मनुष्य अपनी बुद्धि विवेक से उस पर कार्य करता है। नियतिवादी प्रकृति को प्रथम स्थान देते है, जबकि संभववादी मनुष्य की क्रियाओं को महत्व प्रदान करते है। आज के तकनीकी युग में विकास के फलस्वरूप वातावरण को संशोधित ही नहीं बल्कि परिवर्तित भी किया जा सकता है। मानव के स्वभाव का प्रभाव वातावरण पर भी पड़ता है।

ब्लाश के शब्दो में – 'प्रकृति सीमाएं निर्धारित करती है तथा मानवीय अधिवास हेतु संभावनाएं प्रदान करती है, लेकिन दी गई परिस्थितियों में मानव किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है अथवा सामंजस्य स्थापित करता है यह उसकी अपनी परम्परागत जीवन शैली पर निर्भर करता है।', मनुष्य संभावनाओं का स्वामी है, उसकी स्वामी के रूप में उसका निर्णायक है।

भोजन, आदतो, संस्कृति आदि में भिन्नताए पर्यावरण तय करती है लेकिन पर्यावरण तानाशाह नहीं है वह सिर्फ सलाहकार है। टुण्ड्रा में मनुष्यों द्वारा बनाई गई कृत्रिम पर्यावरणीय परिस्थितियों में चाय कॉफी रबर की खेती की जा सकती है। पर्यावरण कुछ संभावनाओं को सीमित करता है लेकिन अन्य संभावनाएं देता है।

क्रियाशील मानव अपनी क्रियाओं द्वारा जगत के जड़ एवं चेतन दोनों ही तत्वों को परिवर्तित करता है। मानव अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों के फलस्वरूप ऐसे पौधो की किस्मों को विकास किया है जो अपनी मूल जलवायु दशाओं के अतिरिक्त नई जलवायु दशाओं में भी उगाये जा सकते है, जैसे गेहुँ भूमध्यसागरीय पौधा है लेकिन आज यह संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया के साथ चीन, भारत में भी सफलता पूर्वक उगाया जा रहा है।

मनुष्य पर्यावरण की उपज नहीं है, मनुष्य संस्कृति पर्यावरण की उपज है अर्थात् मनुष्य संस्कृति के अनुसार ही कार्य करता है।

1. संभववाद की अवधारणा पर्यावरणीय नियतिवाद की प्रतिक्रिया के रूप में आई। पर्यावरण नियतिवादी में मानव निष्क्रीय तत्व के रूप में माना जाता है। लेकिन संभववाद की अवधारणा में मानव को हमेशा से पर्यावरण का सक्रिय ऐजेन्ट माना जाता है।
2. मानव समाज के ज्ञान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रगति के साथ पर्यावरण को वह अपने हिसाब से बदलता है। आप समझ सकते है मानव बंजर भूमि में हरियाली ला सकता है। मानव क्रियाकलाप पर्यावरणीय कारकों द्वारा नियंत्रित नहीं होता है।
3. संभववाद का सिद्धान्त कहता है कि, दुनिया संभावनाओं से भरी है और यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग किस प्रकार करें।
4. राजस्थान जैसे क्षेत्र जहाँ पानी की कमी हमेशा बनी रहती है वहॉ कृषि करना प्रकृति को चुनौती देना था, लेकिन फिर भी राजस्थान में नहर निकालकर सिंचाई के माध्यम से कृषि की गई। राजस्थान में अब चॉवल की खेती कर रहें है, जबकि वह रेगिस्तानी क्षेत्र है। उसी प्रकार से इज़राईल को भी देखिए वहां भी पानी की कमी के बावजुद उन्होंने समस्याओं को दूर करने के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली और उर्ध्वाधार खेती का नवाचार किया ।

वातावरण तो एक शक्ति है जो अपने विभिन्न अंगो द्वारा जगत का संचार करती है। मनुष्य उसी का सशक्त अंग है जिसके विभिन्न क्रियाएं सामने आते है जैसे पर्वतो पर कृषि करना, शीत बर्फीले स्थानो पर निवास करना, कृषि करना आदि। किसी एक जलवायु में कृत्रिम दशाए उत्पन्न करके दुसरी जलवायु प्रदेशो की फसलो को उत्पन्न करके मानव प्रकृति के साथ संघर्ष को दर्शाता है। मानव में अपार शक्ति है, वह नदियो के मुख मोड़ सकता है।

नियतिवादी वातावरण को सर्वशक्ति मानते है और यह बताते हैं कि मनुष्य के सभी क्रियाकलाप प्राकृतिक वातावरण की शक्तियों के अनुरूप होते है, लेकिन यह पूर्णतः सत्य नहीं है, क्योंकि मनुष्य क्रियाशील प्राणी है। वह प्रतिक्रिया करके वातावरण को भी परिवर्तित करने की क्षमता रखता है, जैसे मनुष्य पशु–पक्षियों की भांति एक ही वातावरण से आबद्ध नहीं रहता, बल्कि विभिन्न प्रकार के वातावरण में अपने जीवन–यापन के साधन जुटा लेता है, अपने बुद्धिबल से प्रतिकुल जलवायु को भी अनुकुल बना लेता है। गर्मी से बचने के लिए वातानुकुलन और पंखे का उपयोग करता है, ठन्ड से बचने के लिए उनी कपड़े और घरों को गरम रखता है। मनुष्य अपनी इच्छानुसार जीवन–यापन कर सकता है। टम्बोल्ट महोदय ने पृथ्वी के र्निजीव और जीवधारियों के बीच पारस्परिक संबंधो का विश्लेषण किया और उन्होंने बताया की प्रकृति का मानव पर प्रभाव पड़ता है और मनुष्य भी प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव को बदलने की कोशिश करता है। मनुष्य अपनी बुद्धिबल से प्राकृतिक शक्तियों के नियंत्रण को कम कर देता है। मनुष्य में आश्चर्यजनक क्षमता होती है कि वह उसके द्वारा अपने आप को सभी प्रकार की जलवायु में रहने योग्य बना लेता है, परन्तु बुद्धिबल और क्षमता होते हुए भी मनुष्य सभी क्षेत्रों में पार्थिव जीवन से बहुत अधिक जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष

संभववादी विचारको को हमने पाया कि वे कठोर विचार नहीं रखते बल्कि यह कहते है कि प्रकृति और मनुष्य दोनों ही महत्वपूर्ण है। अन्त में मेरी सोच यह है कि वास्तव में तो प्रकृति का मनुष्य पर नियंत्रण है और न मनुष्य प्रकृति की विजेता है दोनों का एक–दुसरे पर अन्योन्याश्रित है। मानव अपनी उन्नति के लिए प्रकृति पर आधारित होता है, यह नव निश्चयवाद है। मनुष्य जटिल से जटिल तक परिर्वतनों को लाने में समर्थ है, परन्तु उसे प्राकृतिक नियमों का सदैव पालन करना पड़ता है।

संदर्भ सूची

1. http://nopr.niscair.res.in/bitstream/123456789/7867/1/BVAAP%2017%282%29%20168-174.pdf
2. http://shodh.inflibnet.ac.in:8080/jspui/bitstream/123456789/2875/2/02_introduction.pdf

3. https://www.allresearchjournal.com/archives/2017/vol3issue1/PartK/5-4-40-783.pdf
4. https://nios.ac.in/media/documents/333H/26.pdf
5. https://www.jetir.org/papers/JETIR1807499.pdf
6. https://www.drdo.gov.in/sites/default/files/prodhyogic-vishesh-document/pv_mar_apr_18.pdf
7. https://web.sol.du.ac.in/my_modules/type/cbcs-30-3/data/root/M.A.%20Hindi/Semester%203/Paper%20303-%20Hindi%20Ke%20Anye%20Gagay%20Roop/Adhyayan%20Saamgri%20-%20Unit%201%20to%204.pdf
8. https://spc.uk.gov.in/department1/library_file/file-18-10-2021-06-01-05.pdf
9. https://www.padhaimantra.org/wp-content/uploads/2020/04/chapter-9-min.pdf
10. http://new.dbrau.org.in/bitstream/123456789/55072/1/VP%2068-69%289%29%2040-42.pdf

****